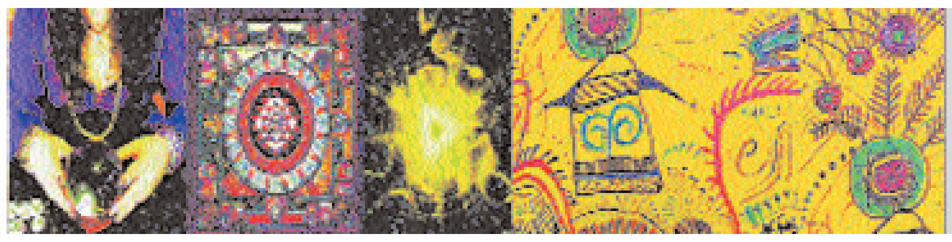

जानें शनि की साढ़ेसाती के तीन चरण, असर और बचाव के उपाय

पंडित प्रमोद पांडेय

ज्योतिष शास्त्र में शनि को कर्म, न्याय, अनुशासन, मेहनत और जिम्मेदारी से जोड़कर देखा जाता है. मान्यता है कि शनि व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार परिणाम देते हैं. शनि की गति अन्य प्रमुख ग्रहों की तुलना में धीमी मानी जाती है, इसलिए किसी राशि पर उनके गोचर का प्रभाव लंबे समय तक रहने की बात कही जाती है. शनि की साढ़ेसाती भी इसी धीमी गति से जुड़ी ज्योतिषीय स्थिति है.

साढ़ेसाती का नाम इसकी अवधि से जुड़ा है. ज्योतिषीय गणना के अनुसार जब शनि जन्म के समय मौजूद चंद्र राशि से एक राशि पहले प्रवेश करते हैं, तो साढ़ेसाती की शुरुआत मानी जाती है. इसके बाद शनि चंद्र राशि से होकर गुजरते हैं और फिर उससे अगली राशि में प्रवेश करते हैं. तीनों राशियों में शनि का गोचर करीब ढाई-ढाई साल रहने की मान्यता है. इस तरह कुल अवधि लगभग साढ़े सात साल होती है.

साढ़ेसाती को लेकर लोगों के मन में अक्सर डर या चिंता रहती है. हालांकि ज्योतिष में इसे केवल परेशानी या अशुभ समय के रूप में देखना उचित नहीं माना जाता. किसी व्यक्ति पर इसका प्रभाव कैसा रहेगा, यह उसकी जन्म कुंडली में शनि की स्थिति, चंद्रमा की स्थिति और दूसरे ग्रहों के योगों पर निर्भर माना जाता है.

क्या होती है शनि की साढ़ेसाती?

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार साढ़ेसाती की गणना चंद्र राशि से की जाती है. जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि में स्थित होता है, उसे जन्म राशि या चंद्र राशि कहा जाता है. जब शनि इस चंद्र राशि से पिछली राशि में प्रवेश करते हैं, तो साढ़ेसाती का पहला चरण शुरू माना जाता है. इसके बाद शनि जन्म यानी चंद्र राशि में आते हैं. यह दूसरा चरण माना जाता है. इसके बाद शनि चंद्र राशि से अगली राशि में प्रवेश करते हैं और साढ़ेसाती का तीसरा चरण शुरू होता है. शनि के प्रत्येक राशि में लगभग ढाई वर्ष रहने की मान्यता है. इसलिए तीन राशियों का कुल समय लगभग साढ़े सात वर्ष माना जाता है. यानी साढ़ेसाती किसी एक राशि में पूरे साढ़े सात साल रहने का नाम नहीं है. यह चंद्र राशि के आसपास की तीन राशियों से गुजरने वाली शनि की स्थिति है.

साढ़ेसाती के दौरान किन परिस्थितियों की मान्यता है?

ज्योतिषीय मान्यताओं में साढ़ेसाती के दौरान जीवन में कई तरह के बदलावों की बात कही जाती है. इनमें काम में देरी, जिम्मेदारियों का बढ़ना, नौकरी या व्यवसाय में बदलाव, आर्थिक मामलों में सावधानी और मानसिक दबाव जैसी परिस्थितियां शामिल हो सकती हैं. कुछ लोगों के लिए यह अवधि मेहनत और अनुशासन के कारण करियर में मजबूत आधार तैयार करने वाली भी मानी जाती है. लंबे समय से रुके कामों को पूरा करने, जिम्मेदारियां निभाने और जीवन में स्थिरता लाने का अवसर भी इस अवधि से जोड़ा जाता है.

क्या साढ़ेसाती हर व्यक्ति के लिए अशुभ होती है?

नहीं. ज्योतिष में साढ़ेसाती को हर व्यक्ति के लिए एक जैसी अशुभ अवधि नहीं माना जाता. यह एक आम धारणा है कि साढ़ेसाती शुरू होते ही परेशानियां बढ़ जाएंगी, लेकिन ज्योतिषीय गणना इससे अधिक विस्तृत मानी जाती है. कुंडली में शनि किस राशि में हैं, किस भाव में स्थित हैं, किन ग्रहों के साथ संबंध बना रहे हैं और चंद्रमा की स्थिति कैसी है—इन सभी बातों को देखा जाता है. दशा और अंतर्दशा जैसे अन्य ज्योतिषीय कारकों को भी महत्व दिया जाता है. इसी वजह से केवल यह जानना कि किसी व्यक्ति की साढ़ेसाती चल रही है, उसके भविष्य के बारे में निश्चित निष्कर्ष निकालने के लिए पर्याप्त नहीं माना जाता.

साढ़ेसाती के तीन चरण

पहला चरण:
पहले चरण में शनि जन्म या चंद्र राशि से एक राशि पहले होते हैं. ज्योतिषीय मान्यताओं में इस समय आर्थिक मामलों, परिवार, खर्च और मानसिक चिंता से जुड़े विषयों पर ध्यान देने की बात कही जाती है. कुछ लोगों को कामकाज में बदलाव या अतिरिक्त जिम्मेदारियों का सामना करने की मान्यता भी है. हालांकि हर व्यक्ति पर इसका प्रभाव समान नहीं माना जाता. जन्म कुंडली में शनि की स्थिति और दूसरे ग्रहों के योगों के आधार पर परिणाम अलग-अलग बताए जाते हैं.

दूसरा चरण:
साढ़ेसाती का दूसरा चरण तब माना जाता है, जब शनि सीधे जन्म राशि यानी चंद्र राशि में गोचर करते हैं. इसे साढ़ेसाती का महत्वपूर्ण चरण माना जाता है. ज्योतिषीय मान्यता के अनुसार इस दौरान व्यक्ति को अपने काम, परिवार, जिम्मेदारियों और मानसिक स्थिति पर विशेष ध्यान देना पड़ सकता है. कुछ मतों में इस अवधि को आत्ममंथन और अनुशासन से जोड़कर देखा जाता है. व्यक्ति को अपनी प्राथमिकताओं में बदलाव करने, पुराने निर्णयों की समीक्षा करने और मेहनत बढ़ाने की स्थिति बन सकती है.

तीसरा चरण:
तीसरे चरण में शनि चंद्र राशि से दूसरी राशि में पहुंचते हैं. यह साढ़ेसाती का अंतिम चरण माना जाता है. ज्योतिषीय मान्यताओं में इसे धीरे-धीरे परिस्थितियों में स्थिरता आने का समय भी माना जाता है. हालांकि यहां भी परिणाम कुंडली के आधार पर अलग बताए जाते हैं. किसी व्यक्ति के लिए जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं तो किसी दूसरे के लिए करियर या आर्थिक स्थिति में स्थिरता आने की संभावना बताई जाती है.

मोगरा घर में लाए खुशहाली

खुशबू के साथ सकारात्मक माहौल: मोगरे के फूल अपनी मनमोहक खुशबू के लिए जाने जाते हैं. घर के आंगन, बालकनी या खिड़की के पास मोगरे का पौधा लगाने से वातावरण सुगंधित और खुशनुमा बना रहता है. वास्तु की मान्यताओं में भी मोगरे को शुभ पौधों में शामिल किया जाता है. माना जाता है कि इसकी सुगंध घर में सकारात्मकता का माहौल बनाने में मदद करती है.

कहां लगाएं पौधा: मोगरे के पौधे को ऐसी जगह रखना बेहतर माना जाता है, जहां उसे पर्याप्त धूप और हवा मिल सके. बालकनी, आंगन या खुली खिड़की के पास इसे लगाया जा सकता है. पौधे को बहुत अधिक अंधेरी या लगातार पानी जमा रहने वाली जगह पर रखने से बचना चाहिए. अच्छी धूप मिलने पर मोगरे में फूल भी बेहतर आते हैं.

मन को देता है सुकून: मोगरे की प्राकृतिक खुशबू वातावरण को ताजगी देने के साथ मन को भी सुकून देने वाली मानी जाती है. शाम के समय इसके फूलों की खुशबू घर के आसपास फैलती है, जिससे वातावरण सुगंधित हो जाता है. यही वजह है कि इसे घर की सजावट के साथ-साथ खुशबूदार पौधे के रूप में भी पसंद किया जाता है. देखभाल भी आसान: मोगरे को नियमित लेकिन सीमित पानी की जरूरत होती है. गमले में जल निकासी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए. समय-समय पर सूखी टहनियां और पत्तियां हटाने से पौधे का विकास बेहतर रहता है. फूल आने के मौसम में पर्याप्त धूप और सही सिंचाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए.

वास्तु से जुड़े शुभ-अशुभ प्रभाव पारंपरिक मान्यताओं पर आधारित हैं। पौधा लगाते समय इसकी धूप, हवा, पानी की निकासी और नियमित देखभाल को प्राथमिकता देना ज्यादा जरूरी है।

परंपरा: माला जाप से बढ़ती समृद्धि की मान्यता

भारतीय धार्मिक परंपराओं में मंत्र जाप का विशेष महत्व माना गया है. मान्यता है कि नियमित रूप से माला से मंत्र जाप करने से मन एकाग्र होता है और व्यक्ति में सकारात्मक सोच विकसित होती है. कई धार्मिक परंपराओं में कुछ विशेष मंत्रों के जाप को धन, समृद्धि और आर्थिक उन्नति से भी जोड़ा गया है.

धन-समृद्धि के लिए मां लक्ष्मी से जुड़े मंत्रों का जाप करने की परंपरा है. श्रद्धालु अपनी आस्था के अनुसार कमल गट्टे, स्फटिक या रुद्राक्ष की माला का उपयोग करते हैं. माना जाता है कि कमल गट्टे की माला से मां लक्ष्मी के मंत्रों का जाप करना समृद्धि की कामना के लिए शुभ होता है.

जाप करते समय शांत स्थान पर बैठकर एक निश्चित संख्या में मंत्र दोहराने की परंपरा है. आमतौर पर 108 दानों वाली माला का प्रयोग किया जाता है. जाप के दौरान मन को मंत्र पर केंद्रित रखने और नियमितता बनाए रखने को महत्वपूर्ण माना जाता है.

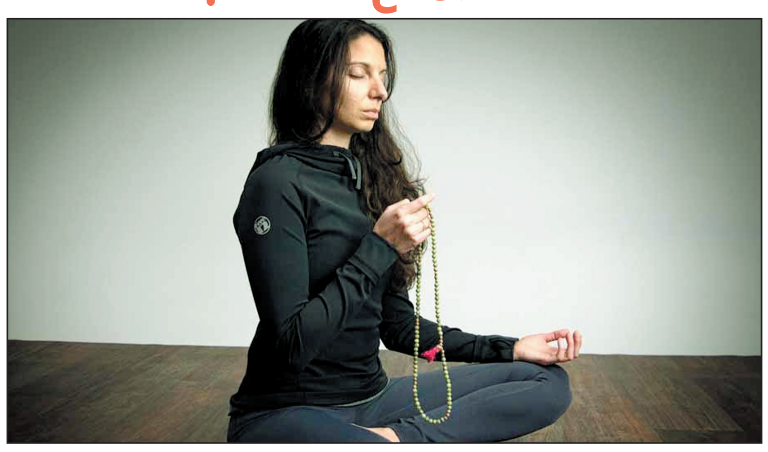

माला जाप से सीधे धन प्राप्त होने का वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है. धार्मिक मान्यताओं में इसका संबंध आध्यात्मिक साधना, मानसिक एकाग्रता और सकारात्मक भाव से जोड़ा जाता है. आर्थिक स्थिति बेहतर करने के लिए नियमित बचत, आय बढ़ाने के प्रयास और सोच-समझकर वित्तीय निर्णय लेना भी जरूरी है. इस तरह माला जाप को श्रद्धा और आध्यात्मिक साधना के रूप में किया जा सकता है. धन-लाभ से जुड़ी बातें मुख्य रूप से धार्मिक और पारंपरिक मान्यताओं पर आधारित हैं, इन्हें निश्चित आर्थिक परिणाम की गारंटी नहीं माना जाना चाहिए.

'अ' अक्षर से नाम वालों में ये खास गुण

ज्योतिषीय मान्यताओं में नाम के पहले अक्षर को व्यक्ति के स्वभाव और व्यक्तित्व से जोड़कर देखा जाता है. 'अ' से शुरू होने वाले नामों को आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और स्वतंत्र सोच से जुड़ा माना जाता है.

ज्योतिष और नामाक्षर से जुड़ी पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार 'अ' अक्षर से नाम शुरू होने वाले लोगों का व्यक्तित्व प्रभावशाली माना जाता है. ऐसे लोग आमतौर पर अपनी बात स्पष्ट तरीके से रखने और परिस्थितियों में खुद निर्णय लेने की कोशिश करते हैं. इन्हें किसी के दबाव में काम करना पसंद नहीं होता और अपने तरीके से आगे बढ़ने की इच्छा रहती है.

नेतृत्व की प्रवृत्ति

'अ' अक्षर वालों में नेतृत्व करने की क्षमता होने की मान्यता है. परिवार हो या कार्यक्षेत्र, ये जिम्मेदारी लेने से पीछे नहीं हटते. किसी काम की शुरुआत करने और उसे पूरा करने के लिए मेहनत करने का प्रयास करते हैं. सफलता मिलने पर आत्मविश्वास और बढ़ जाता है.

मेहनत के साथ महत्वाकांक्षा

इन लोगों को जीवन में अपनी अलग पहचान बनाने की इच्छा हो सकती है. करियर में आगे बढ़ना, आर्थिक रूप से मजबूत होना और अपने फैसले खुद लेना इनके लिए महत्वपूर्ण माना जाता है.

आग्नेय कोण में रसोई सबसे शुभ

घर में रसोई की दिशा का विशेष महत्व माना जाता है

वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में रसोई की दिशा का विशेष महत्व माना जाता है. रसोई को अग्नि तत्व से जुड़ा स्थान माना जाता है, इसलिए इसे ऐसी दिशा में बनाने की सलाह दी जाती है, जहां अग्नि तत्व का संतुलन बना रहे. वास्तु के अनुसार दक्षिण-पूर्व दिशा यानी आग्नेय कोण रसोई के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है. माना जाता है कि इस दिशा में रसोई होने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संतुलन बना रहता है.

यदि किसी कारण से दक्षिण-पूर्व दिशा में रसोई बनाना संभव नहीं हो, तो उत्तर-पश्चिम दिशा को दूसरा विकल्प माना जाता है. वहीं, रसोई के लिए उत्तर-पूर्व दिशा को सामान्यत: उपयुक्त नहीं माना जाता. वास्तु मान्यताओं के अनुसार इस दिशा का संबंध जल तत्व से होता है, जबकि रसोई अग्नि तत्व से जुड़ी होती है.

रसोई के भीतर भी सामान की स्थिति को लेकर वास्तु में कुछ नियम बताए गए हैं. गैस चूल्हे को दक्षिण-पूर्व हिस्से में रखना और खाना बनाते समय व्यक्ति का मुंह पूर्व दिशा की ओर होना शुभ माना जाता है. वहीं, पानी से संबंधित सामान जैसे सिंक को उत्तर या उत्तर-पूर्व हिस्से में रखने की सलाह दी जाती है. भारी सामान और अनाज रखने के लिए दक्षिण या पश्चिम दिशा को बेहतर माना जाता है.

हालांकि वास्तु से जुड़े ये सुझाव पारंपरिक मान्यताओं पर आधारित हैं और इनके वैज्ञानिक प्रभाव का प्रमाण नहीं है. घर का नक्शा बनाते समय रसोई की दिशा के साथ हवादारी, धुआं निकलने की व्यवस्था, प्राकृतिक रोशनी, पानी की लाइन और सुरक्षा जैसे व्यावहारिक पहलुओं का भी ध्यान रखना जरूरी है.

25 को अनंत चतुर्दशी, 14 गांठों वाले अनंत सूत्र का महत्व

भगवान विष्णु के अनंत स्वरूप की पूजा का दिन

इसी दिन कई जगहों पर होगा गणपति विसर्जन

भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाने वाला अनंत चतुर्दशी पर्व इस बार 25 सितंबर, शुक्रवार को मनाया जाएगा. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु के अनंत स्वरूप की पूजा की जाती है और श्रद्धालु अनंत सूत्र धारण करते हैं. अनंत चतुर्दशी का संबंध गणेश उत्सव से भी है. दस दिवसीय गणेशोत्सव का समापन इसी दिन होता है, इसलिए कई स्थानों पर गणपति प्रतिमाओं का विसर्जन भी किया जाता है.

अनंत चतुर्दशी के दिन सुबह स्नान के बाद घर के पूजा स्थान की सफाई कर भगवान विष्णु की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित की जाती है. दीप प्रज्ज्वलित कर फल, फूल, मिठाई सहित अन्य पूजन सामग्री अर्पित की जाती है. इसके बाद अनंत सूत्र की पूजा कर उसे धारण करने की परंपरा है. श्रद्धालु भगवान विष्णु से परिवार की सुख-शांति, समृद्धि और आरोग्य की कामना करते हैं.

संकल्प और आस्था का प्रतीक

अनंत सूत्र को केवल एक धार्मिक धागा नहीं माना जाता, बल्कि इसे भगवान विष्णु के प्रति आस्था और संकल्प का प्रतीक माना जाता है. कई परिवारों में घर के बड़े-बुजुर्ग या पुरोहित के हाथों से सूत्र बंधवाने की परंपरा भी है. मान्यता है कि इस दिन श्रद्धापूर्वक पूजा और व्रत करने से परिवार में सुख-समृद्धि बनी रहती है.

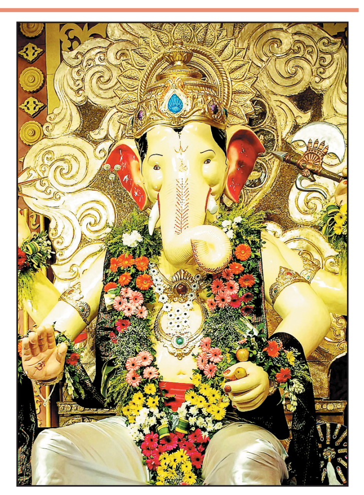

गणपति को दी जाएगी विदाई

अनंत चतुर्दशी गणेश भक्तों के लिए भी विशेष महत्व रखती है. गणेश चतुर्थी से शुरू हुए दस दिवसीय गणेश उत्सव का समापन इस दिन होता है. कई घरों और सार्वजनिक पंडालों में स्थापित गणपति प्रतिमाओं का विसर्जन 25 सितंबर को किया जाएगा.

14 गांठों वाला सूत्र क्यों खास

अनंत चतुर्दशी की पूजा में अनंत सूत्र का विशेष महत्व माना जाता है. परंपरा के अनुसार इसमें 14 गांठें लगाई जाती हैं. धार्मिक मान्यताओं में इन गांठों को चौदह लोकों और भगवान विष्णु के अनंत स्वरूप से जोड़ा जाता है. पूजा के बाद पुरुष सामान्यत: दाहिने हाथ और महिलाएं बाएं हाथ में इसे बांधती हैं. हालांकि अलग-अलग क्षेत्रों में अनंत सूत्र धारण करने की परंपरा में कुछ अंतर भी देखने को मिलता है.

राशिफल

दिनांक- 20 से 26 सितम्बर 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति :— इस सप्ताह सूर्य कन्या राशि में, मंगल कर्क राशि में, बुध कन्या राशि में ता. 26 को 12/38 दिन से तुला राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र तुला राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा धनु मकर कुम्भ और मीन राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :— ता. 20 को अश्लेषायां गुरू के प्रभाव से बाजार में एकदम से तेजी आयेगी. घी, तेल, रूई, कपास, सोना, चांदी, गुड, खाण्ड, चीनी, तिलहन बाजारों में तेजी का लाभ मिलेगा. ता. 22 को तुलायां बुध के प्रभाव से गुड, खाण्ड, सोना, रूई में तेजी आती है. चांदी, अलसी, सरसों, बिनौला, मूंगफली में मंदी आती है.

पर्व/व्रत/त्यौहार :

रविवार	20	सितम्बर को अदु:ख नवमीं,
सोमवार	21	सितम्बर को दशावतार व्रत, धूप दशमीं,
मंगलवार	22	सितम्बर को डोल ग्यारस, पदमा एकादशी व्रत, जल झूलनी एकादशी, वामन द्वादशी
गुरूवार	24	सितम्बर को प्रदोष व्रत,
शुक्रवार	25	सितम्बर को अनंत चर्तुदशी व्रत, श्री गणेश विसर्जन
शनिवार	26	सितम्बर को स्नानदान व्रत पूर्णिमा, महालय प्रारम्भ

मेष

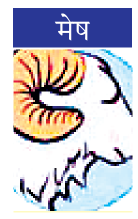

अपने मन में चल रहे अर्न्तद्वंद को दूर कर कार्य में जुट जाने का समय है, वरिष्ठों का सहयोग बना रहेगा, आप अपने स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर अत्याधिक खर्च करेंगे, व्यवसाय में किसी करीबी मित्र को साझेदार बना सकते हैं, सप्ताह के अंतिम समय स्वास्थ्य में गिरावट संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे.

वृषभ

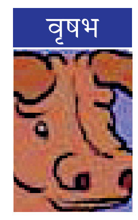

व्यापार यात्रा और धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, सफ्लता की ओर कदम बढ़ेगे, कार्य पूर्ण करने में सहयोगी का रवैया आपके प्रति सहयोगात्मक रहेगा, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, आप किसी बड़ी योजना में शामिल हो सकते हैं, परन्तु यह आपकी कार्यक्षमता के अनुकूल नहीं होगा, आपको कड़ी मेहनत और योजनाबद्ध तरीके से सफ्लता मिलेगी.

मिथुन

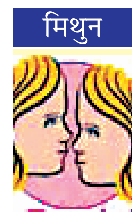

सप्ताह आपका काफी उतार चढ़ाव वाला रहेगा, कार्य की व्यस्तता रहेगी, अधिकारियों से तालमेल बनाकर आगे बढ़े. सामाजिक क्षेत्र में सक्रिता बढ़ेगी, व्यापार में कुछ नये साझेदारों को शामिल कर सकते हैं, किसी करीबी मित्र या रिश्तेदार का सहयोग मिलेगा, सप्ताह के अन्त में अति विश्वास आपको संकट में डाल सकता है.

कर्क

सामाजिक कार्यो में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे, जिस कार्य में हाथ डालेंगे, सफ्लता मिलेगी, वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, परन्त आप अवसरों को गंवा सकते हैं, कैरियर और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, नये वाहन की योजना बन सकती है, सप्ताहान्त में सोच समझकर और कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य होगा, घरेलू वातावरण खुशनुमा रहेगा, मनोरंजक यात्रा होगी.

सिंह

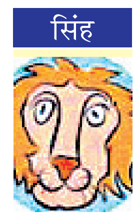

अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय, रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, आप बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं.

कन्या

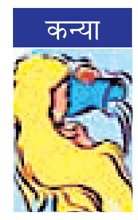

कार्यस्थल पर आपकी योग्यता और कार्य के उचित मान सम्मान मिलेगा, अपनी बात मनवाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, यह सप्ताह कैरियर की दृष्टि से मनोवांछित साबित होगा. आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी, मानसिक असंतुलन किसी प्रकार का कष्ट अथवा घरेलू परेशानी से बचें. दाम्पत्य जीवन में सुख समृद्धि का भाव कायम रहेगा. कारोबार में ईमानदारी से ध्यान दें.

तुला

व्यापारिक और कैरियर की दृष्टि से समय महत्वपूर्ण रहेगा, विद्यार्थी पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त रहेंगे, बच्चों की भावनाओं का ध्यान रखें, सप्ताह के मध्य महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में विरोधियों से सतर्क रहें, किसी करीबी मित्र के साथ दूर दराज की यात्रा पर जा सकते हैं, पुराना पैसा मिलने का योग है.

वृश्चिक

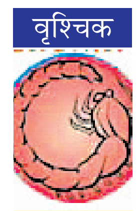

प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेंगे, अपनी योग्यता और सामर्थ्य का उपयोग सफ्लता पाने के लिये करेंगे, आपके व्यवहार और सोच में व्यापक बदलाव आ सकता है, जकर्क जायजाद की खरीद बिक्री और ऋण के लेनदेन से लाभ होगा, राजनेता अपने हित की रक्षा के लिये प्रयास करेंगे, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

धनु

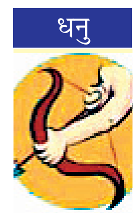

कार्यक्षेत्र में कैरियर में बड़ी सफ्लता मिलेगी, जिससे हर क्षेत्र में आप अपने को खास और विशिष्ट स्थिति में पायेंगे, व्यवसायिक साझेदारों से सावधानी रखें, महत्वपूर्ण निर्णय होंगे, जीवनसाथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में नई संभावना देता है, नई सोच व कार्यशैली लाभकारी सिद्ध होगी, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा.

मकर

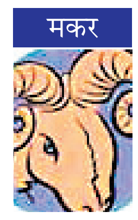

आप अच्छी तरह सोच विचार कर ही अपनी प्राथमिकतायें तय करेंगे, परस्पर विचारों का आदान प्रदान करने से अच्छी बात बन सकती है, अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ेगा, विशिष्टजनो से आपकी प्रशंसा होगी, भूमि और घर खरीद बिक्री फायदेमंद रहेगी, सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार एवं राजकीय कारणों से की गई यात्रा में बेहतर परिणाम मिलेंगे.

कुम्भ

साझेदारियों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सलझ सकते हैं,जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा लोगों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, घर परिवार में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गो के स्वास्थ्य पर ध्यान दें.

मीन

सोच समझकर ही आप आगे बढ़ना चाहेंगे, आप पूरे होश एवं जोश के साथ कार्य में जुट जायेंगे, भविष्य में लाभ की योजनाओं की शुरूआत हो सकती है अनुसंधान एवं कला के क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी. उच्च पदस्थ लोगों के साथ सामूहिक कार्य में भाग लेंगे, जीवनसाथी और बच्चों को आपसे अपेक्षायें बढ़ सकती है.